THE ART OF LIVING

श्री श्री गौशाला

मूल भारतीय देसी गायों के नस्लों का संरक्षण

- भारतीय मूल की देसी गायों के नस्लों की संख्या **100** से घटकर केवल **40** नस्लों तक सीमित रह गई है। श्री श्री गौशाला का उद्देश्य भारत की देशी और लुप्तप्राय नस्लों का संरक्षण करना है।
- यहाँ **20** दुर्लभ नस्लों की **1,500** गायें हैं।
- इस पहल का उद्देश्य पारंपरिक गौशाला प्रणाली को पुनर्जीवित करना है।

बेंगलुरु आश्रम गौशाला में रखी गई देसी गायों की नस्लें

गिर	–	गुजरात	डांगी	–	महाराष्ट्र
कांकरेज	–	गुजरात	खिल्लार	–	महाराष्ट्र
कांगायम	–	तमिलनाडु	लाल कंधारी	–	महाराष्ट्र
आलंबाड़ी	–	तमिलनाडु	थारपारकर	–	राजस्थान
पुलिकुलम	–	तमिलनाडु	राठी	–	राजस्थान
उमबालाचेरी	–	तमिलनाडु	हल्लिकर	–	कर्नाटक
कृष्णा वैली	–	तमिलनाडु	मलनाड गिद्दा	–	कर्नाटक
साहीवाल	–	पंजाब	हरियाणवा	–	हरियाणा
कासरेगोड	–	केरल	पुंगनूर	–	आंध्र प्रदेश
वेचूर	–	केरल	ओंगोल	–	आंध्र प्रदेश

भारतवर्ष के आर्ट ऑफ लिविंग आश्रमों में श्री श्री गौशालाएँ

1. त्रिवेणी आश्रम, पुणे
2. वासद आश्रम, गुजरात
3. विदर्भ आश्रम, नागपुर
4. बोधगया आश्रम, बिहार
5. ओंकारेश्वर आश्रम, इंदौर
6. कोसी आश्रम, उत्तर प्रदेश
7. मैसूर आश्रम, कर्नाटक
8. फरुखाबाद आश्रम, उत्तर प्रदेश
9. दीफू आश्रम, असम

पर्यावरणीय और कृषि प्रभाव – श्री श्री गौशाला पर्यावरणीय दृष्टि से स्थिर और किसानों के लिए लाभकारी है, और यह प्राकृतिक खेती को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने का एक आदर्श प्रस्तुत करती है।

श्री श्री गौशाला की विशेषताएँ

दूध निकालने की प्रक्रिया – हम अपनी गायों का दूध "दोहन प्रक्रिया" से निकालते हैं।

खाद्य सुरक्षा – गायों को एक बार सुबह और फिर शाम को चारा दिया जाता है लेकिन यादि गायें खाना चाहें तो उनके बर्तन में भोजन हमेशा रहता हैं। चारा देने पर गायों में कभी भी भगदड़ नहीं होती। उनकी आहार में शंखपुष्पी, ब्राह्मी, शतावरी, अश्वगंधा, नीम, जिवांती जैसी जड़ी-बूटियाँ शामिल होती हैं।

गायों के लिए **4** अलग-अलग आश्रय स्थल बनाये जाते हैं

- दूध देने वाली गायों के लिए
- पहली बार गर्भवती गायें
- बछड़ों के लिए
- दूध न देने वाली गायें

गायों की भलाई के लिए – गायें कभी भी बाँधी नहीं जाती हैं। उनकी अच्छे से देखभाल की जाती है और सम्मान दिया जाता है, उनका शोषण बिलकुल नहीं किया जाता।

अधिक जानकारी के लिए